सांख्यज्ञानमञ्जरी

संग्राहकः संपादकश्च

डॉ. रणजीत कुमार तिवारी

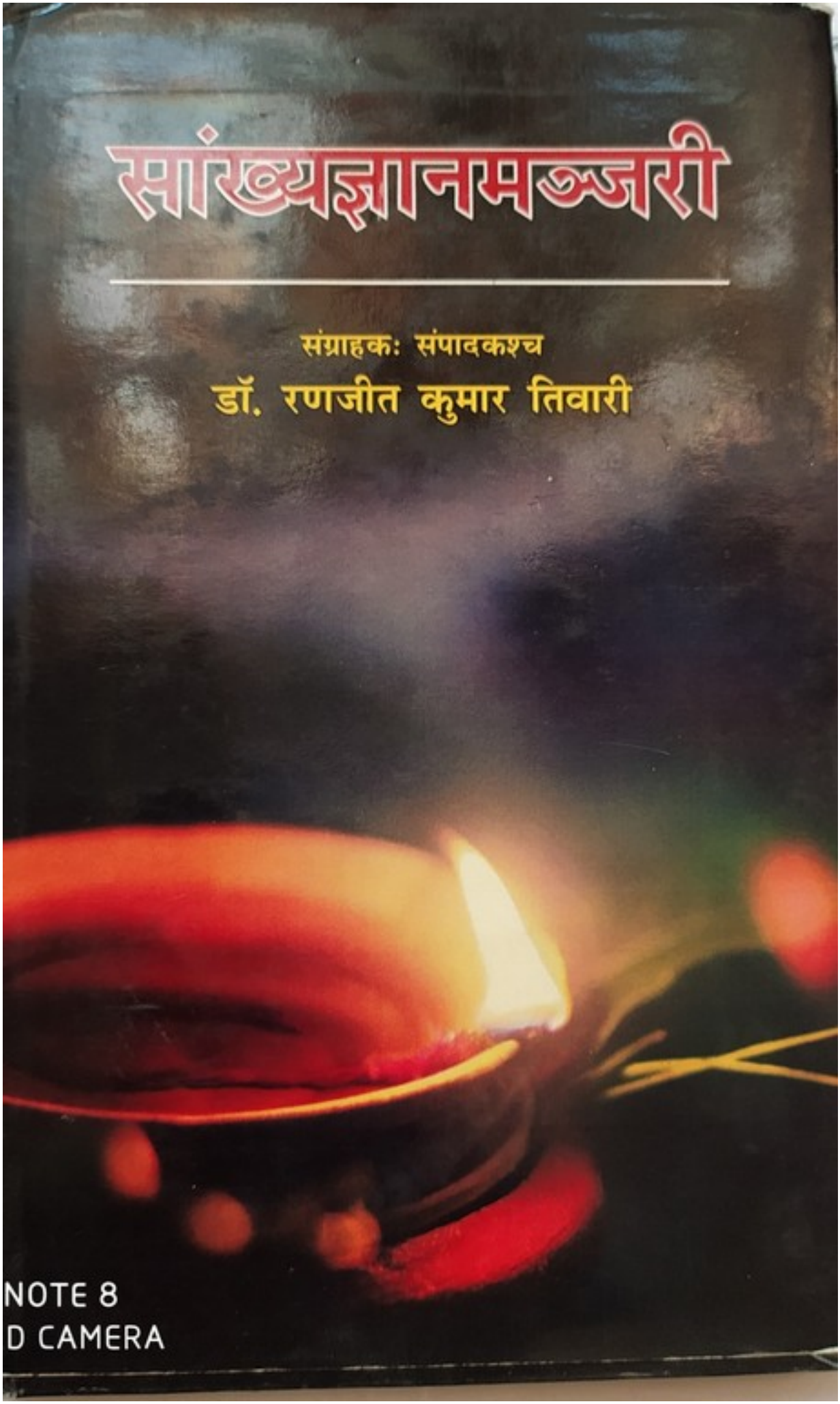

NOTE 8
D CAMERA

विषयानुक्रमणी
(Contents)

विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
सांख्यशास्त्रप्रस्तावना	*डॉ. सुखमय भटटाचार्यः*	13
सांख्यदर्शनविवेचनम्	*डॉ. रणजीत कुमार तिवारी*	17
साङ्ख्यदर्शन की समीक्षा : महाभारत के विशेष संदर्भ में	*श्री गोविन्द शर्मा*	30
सांख्यदर्शन की मौलिक अवधारणाएँ एवं मौलिक सिद्धान्त	*श्री केशव लुइटेल*	37
सांख्यदर्शन के विकासवाद की अवधारणा	*डॉ. राधेश्याम मिश्र*	49
नास्ति सांख्यसमं ज्ञानम्	*ড. তৃপ্তি দাস*	55
Sankhya theory of Knowledge	*Dr. Sanghamitra Debnath*	61
Concept of God in Sankhya Philosophy	*Dr. Bikash Bhargab Sarma*	67
Understanding Basic Idea of Sankhya Philosophy of Education	*Dr. Santanu Das*	73
परिशिष्ट–'क' सांख्य-कारिका		84
परिशिष्ट–'ख' सांख्य-कारिका (हिन्दी अनुवाद)	*डॉ. रणजीत कुमार तिवारी*	91

TE 8
AMERA

About the Authors

(In order of their appearances in the respective sections)

- Dr. Sukhamaya Bhattacarya, Formerly Principal, Cachar College, Silchar
- Dr. Ranjeet Kumar Tiwary, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Women's College, Silchar
- Sri Govind Sharma, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Assam University
- Sri Keshab Luitel, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Guruchran College, Silchar
- Dr. Radhyeshyam Mishra, Assistant Professor, Central Institute of Himalayan Culture Studies (CIHCS), Dahung, West Kameng Disrict, Arunachal Pradesh
- Dr. Tripti Das, Assistant Professor & Head, Department of Sanskrit, Women's College, Silchar
- Dr. Bikash Bhargab Sarma, Assistant Professor, Department of Philosophy, Guruchran College, Silchar
- Dr. Sanghamitra Debnath, Assistant Professor & Head, Department of Philosophy, Women's College, Silchar
- Dr. Santanu Das, Assistant Professor, Department of Education, Women's College, Silchar

NOTE 8
AD CAMERA

सांख्यदर्शन की समीक्षा : महाभारत के विशेष सन्दर्भ में

—गोविन्द शर्मा

दर्शन शब्द दिखने में जितना व्याप्य है इसका अर्थ उतना ही व्यापक। पाणिनीय व्याकरणानुसार 'दर्शन' शब्द की व्युत्पत्ति 'दृशिर् प्रेक्षणे' धातु से ल्युट् प्रत्यय करने से निष्पन्न होती है। अतएव साधारणतया दर्शन शब्द का अर्थ दृष्टि या देखना, जिसके द्वारा देखा जाय या जिसमें देखा जाय लब्ध होता है। परन्तु दर्शन का शब्दार्थ सामान्य देखना मात्र ही नहीं अपितु प्रकृष्ट ईक्षण (विशेष दृष्टि से देखना) है, जिसमें यथार्थ को देख कर या मनन करके सोपपत्तिक निष्कर्ष निकाला जा सके। *"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यश्च।" 'दृश्यते अनेनेति दर्शनम्'* जिसके द्वारा यथार्थ को देखा जाये, जाना जाये, समझा जाये, पदार्थों का मूलभूत सम्यक् ज्ञान किया जा सके, वही दर्शन है। पदार्थों की उत्पत्ति का स्रोत, उनके सृष्टि का कारण, चेतनत्व-अचेतनत्व विचार, जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग इत्यादि का विचार जिस दृष्टि से किया जाये वही सही अर्थों में दर्शन है। इस प्रकार विशेष दृष्टि के साधन और फल (यथार्थज्ञान) दोनों ही दर्शन की कोटि में समाहित हैं। परन्तु विचारकों के चिंतन एवं विचारधारा भिन्न-भिन्न होने के कारण भिन्न-भिन्न दर्शन बनते रहे या उनका विकास होते रहे। *"यो यच्छ्रद्धः स एव सः"*[1] अर्थात् श्रद्धाओं के अनुरूप ही मनुष्य होता है, तदनुरूप ही कार्यप्रणाली निर्धारित होती है तथा फलोपलब्धि भी तदनुरूप ही होती है। एक ही पदार्थ को भिन्न-भिन्न व्यक्ति अपनी-अपनी दृष्टि से देखता है, भिन्न साधनों से समझता है तथा भिन्न संज्ञा भी देता है, तथापि इनमें सत्य-असत्य का अथवा दोष-अदोष का निर्णय करना कदापि संभव नहीं हो सकता क्योंकि भिन्न विचारों से, भिन्न मार्गों से विचारक यथार्थ का अन्वेषण ही करता है।

NOTE 8
AD CAMERA